

Mahashivaratri Puja

Date : 19th February 1993
Place : Mumbai
Type : Puja
Speech : Hindi
Language

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 06
English	-
Marathi	-

II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	07 - 10

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

आज यहाँ पर हम लोग शिवजी की पूजा करने के लिये एकत्रित हुए हैं। ये पूजा एक बहुत विशेष पूजा है क्योंकि मानव का अन्तिम लक्ष्य यही है कि वो शिव तत्व को प्राप्त करें। शिव तत्व बुद्धि से परे है। उसको बुद्धि से नहीं जाना जा सकता। जब तक आप आत्म-साक्षात्कारी नहीं होते, जब तक आपने अपने आत्मा को पहचाना नहीं, अपने को जाना नहीं, आप शिव तत्व को जान नहीं सकते। शिवजी के नाम पर बहुत ज्यादा आडम्बर, अन्धता और अन्धश्रद्धा फैली हुई है। किन्तु जो मनुष्य आत्म-साक्षात्कारी नहीं वो शिवजी को समझ ही नहीं सकता क्योंकि उनकी प्रकृति को समझने के लिये सबसे पहले मनुष्य को उस स्थिति में पहुँचना चाहिए जहाँ पर सारे ही महान तत्व अपने आप विराजें। उनके लिए कहा जाता है कि वे भोले शंकर हैं। आजकल बुद्धिवादी बहुत से निकल आए हैं संसार में, और अपनी बुद्धि की उड़ान से जो चाहे वो ऊट पटांग लिखा करते हैं और फिर कहते हैं कि ये शिवजी तो भोले हैं। किसी का भोला होना बुद्धिवादियों के हिसाब से तो एकदम ही बेकार चीज है। आजकल आदमी जितना चालाक और धूर्त होगा वो यशस्वी हो जाता है। तो इनका भोलापन कैसे समझा जाए? आजकल के लोग सोचते हैं कि जो आदमी भोला होता है वो नग्न है, बेवकुफ है। लेकिन शिवजी का भोलापन ऐसा है कि जहाँ वो सब कुछ हैं। समझ लीजिए कि ज़रूरत से ज्यादा कोई श्रीमन्त रईस आदमी हो जाए और उसको विरक्ति आ जाए और उसका लोग धन उठा के ले जाए तो लोग कहेंगे अजीब भोला आदमी है जिसका लोग धन चुरा रहे हैं, उसपे कोई असर ही नहीं। लेकिन जब उसको विरक्ति आ गई और उस धन का उसके लिए महात्म्य ही नहीं रहा तो वो अपने भोलेपन में बैठा है और भोलेपन का मजा उठा रहा है। जब सब चीज अपने आप हो ही रही है, सब कुछ कार्यान्वित ही है। तो शिवजी का उसमें कार्य भाग क्या रहता है। वे भोलेपन से सब चीज देखते रहते हैं। वो साक्षी स्वरूप हो करके और शक्ति का कार्य देखते रहते हैं। शक्ति ने सारी सृष्टि रचाई और शक्ति ने ही सारे देवी-देवता बनाए और उनके सारे कार्य बना दिए। उनकी नियुक्ति हो गई और अब शिवजी को क्या काम है। शिवजी को बस देखना मात्र है। और फिर देखने में ही सब कुछ आ जाता है। उनके भोलेपन का असर है तो यह

है कि जिसपे भी दृष्टि पड़ जाए वो ही तर जाता है। जिसके तरफ उनका चित्त चला जाए वो ही तर जाए। कुछ उनको करने की ज़रूरत ही नहीं है। ये सब खेल है। जैसे बच्चों के लिए खेल होता है परमात्मा के लिए भी वो सारा एक खेल है। वो देख रहे हैं। उस भोलेपन में एक और चीज नीहित है। जो भोला आदमी होता है, सत्यवादी होता है अच्छाई से रहता है, वो जब देखता है कि कोई बहुत ही दुष्ट उनसे मुठभेड़ ले रहा है तब उसको बड़े जोर से क्रोध आता है। उसका क्रोध बहुत जबरदस्त होता है। चालाक आदमी होगा वो क्रोध को घुमा देगा, ऐसा बना देगा कि उसकी जो प्रमुख किरणें हैं वो कुछ शान्त हो जाएं। लेकिन भोला आदमी जो होता है वो हंसते ही रहता है। ये क्या मेरे ऊपर वार कर सकता है। ये शिवजी का जो गुण है वो हम सहजयोगियों में आना जरूरी है। इस वक्त हम छोटी-छोटी बातों को सोचते रहते हैं। इनके लिए क्या करना चाहिए। इसकी योजना कैसे करनी चाहिए। जैसे शिवजी ने शक्ति पर सब छोड़ दिया है आप लोग भी सब कुछ शक्ति पर छोड़ सकते हैं लेकिन वो भी फिर एक स्थिति आनी चाहिए। वो भोलापन आपके अन्दर आना चाहिए। इस भोलापन का मतलब ये है कि किसी तरह की नकारात्मकता आपके अन्दर आ ही नहीं सकती। इसलिए आप भोले हैं! साँप लोटे रहे हैं तो साँप को लौटने दो। आप बेकार में परेशान क्यों हैं। जहर पीना है तो जहर पी लेंगे। होना क्या है। जो बिल्कुल विशुद्ध है, जिसमें किसी भी चीज का असर ही नहीं आ सकता, जो समर्थ है, जिसकी शक्तियाँ स्वयं ही उसकी रक्षा कर रही हैं उसको यह बात है कि क्या करे क्या न करे। ये शक्ति हमारे अंदर शिव तत्व से आती है शिव तत्व को प्राप्त करने के लिए आत्म साक्षात्कार होना चाहिए। कुण्डलिनी जो है वो शक्ति है चक्र जो हैं ये सीढ़ियाँ। इन सब सीढ़ियों से चढ़ के आपको प्राप्त एक ही करना है। वो है शिव तत्व। सारे देवी देवताओं को एक विचार है कि आप सबको शिव तत्व पे पहुँचा दें। ये उनका कार्य है और वो उस कार्य में पूरी तरह से लगे हुए हैं। वो ये नहीं पूछते कि इसमें हमारा क्या होगा? हमारी स्थिति क्या है? कहां बैठे? मनुष्य के जैसे नहीं सोचते। वो अंग प्रत्यंग उस शिव के ही हैं और शिव तत्व पर मनुष्य को पहुँचाने के लिए कार्य तत्पर

रहना उनका स्वभाव है। उनको कुछ भाषण देने की ज़रूरत नहीं, उनको कुछ बताने की ज़रूरत नहीं। उनका जो काम है वो भी एक अकर्म सा है। वो बंधे हुए हैं वो अपना काम पूरी तरह से करते हैं। वो सोचते ही नहीं कि कुछ काम कर रहे हैं। ये सारा प्रकाश बिजली से आ रहा है और जड़े होने के कारण उसमें कोई शक्ति नहीं कि वो सोचे। और क्योंकि ये सब देवता लोग निर्विचारिता में बैठे हुए हैं वे भी कुछ सोचते नहीं और जानते भी नहीं कि उनमें क्या शक्तियां हैं। जैसे खाने की चीनी सबको मिठास देती है, पर वो नहीं जानती कि उसके अंदर मिठास है। इसी प्रकार सहजयोगी जब कार्यरत होते हैं तो वो ये नहीं जानते कि हमारे अंदर ये शक्ति है इसलिए हम कार्यरत हैं। जिस वक्त आप लोगों के दिमाग में ये बात आई कि हमने ये कार्य किया, वो कार्य किया, हम लीडर हो गए, हम वो हो गए तो आप सहजयोगी नहीं। सहजयोग में मनुष्य अकर्म में आ जाता है। वो करते रहता है। दिखने को लगता है कर्म कर रहे हैं पर उसको ज्ञात नहीं होता कि वो कुछ कर्म कर रहा है। उसको मालूम नहीं होता कि वो प्यार कर रहा है, पर लोग जानते हैं कि वो बहुत प्यार करता है।

इस प्रकार हमें समझ लेना चाहिए कि आत्म-साक्षात्कार क्या है। एक है जो आप स्वयं हैं सो हैं और आप अपने को शीशे में देख रहे हैं। वो आपका प्रतिबिम्ब हैं। और प्रतिबिम्ब को देखने की जो क्रिया है, देखना मात्र जो है एक तीसरी चीज है। इस प्रकार आप तीन दायरों में घूम रहे हैं। एक देखने वाले, एक जो आपको दिखाई दे रहा है और एक जो देखने की चीज है। ये तीनों ही चीज खत्म हो सकती है। कैसे? कि अगर आप ही अपना आईना बन गए फिर आप अपने को देखते रहते हैं, आप अपने को जानने लगे। यही तुकाराम ने कहा कि आपने अपने को जान लिया फिर और जानने की ज़रूरत ही क्या है? तब ये तीन दायरे कूद कर आप स्वयं में स्थिर हो गए। यही स्थिरता जब पूरी तरह से बन जाती है तब कहना चाहिए कि शिव तत्त्व स्थिर हैं क्योंकि वो अटूट और अटल है। इस शिव तत्त्व में जब आप बैठ जाते हैं तो आपको ऐसा नहीं लगता कि आप कुछ कर रहे हैं। आप अपने में ही समाये रहते हैं। फिर आप ये भी नहीं सोचते हैं कि मुझे कुछ और करना चाहिए। जैसे आजकल बहुत से लोग कहते हैं कि हम बोर हो गए। क्योंकि आप अपने को देख नहीं सकते। आप अपने साथ रह नहीं सकते। आप अपने साथ पांच मिनट बैठ जाएं तो आपको ऐसा लगता है कि भाग खड़े हो। मेरे लिये तो अपने साथ बैठना सबसे बड़ी बात है। इस रस को जब आप प्राप्त करते हैं तब एक भोलापन आपके अंदर आ जाता है। अगर आत्मा है और जिसे कोई भी नष्ट नहीं कर सकता तब ये कौन नष्ट कर सकता

है? किन्तु ये विश्वास हमारे अंदर बैठना बड़ा मुश्किल है। आत्म-साक्षात्कार के बाद आप सहजयोगी हो गये। लेकिन शिव योगी होने के लिये परम विश्वास की ज़रूरत है जैसे कोई साहब जा रहे है तो कहेंगे कि मां कर्पूर है हम कैसे जाएं। आज तक ये बंबई शहर में कोई भी सहजयोगी को नुकसान नहीं हुआ। आप भूल गये आप सहजयोगी हैं। आपके आगे पीछे देव-दूत गण सब लगे हुए हैं लेकिन जैसे आपका विश्वास उठा वो भागे वहां से। कोई कहेगा कि मुझे ठगा जा रहा है, तो ठगता रहे। वो तुम्हें मारने आ रहा है, तो आने दो। वो तुम्हारा कुछ बिगाड़ रहा है तो बिगाड़ने दो। आगे होगा क्या? जाओ मरो। जब विश्वास बना रहा तो आप चले जा रहे हैं। किसी को आप दिखाई ही नहीं देंगे और दिखाई देंगे तो भी पार हो जायेंगे। ऐसे नाना विध प्रश्न हमारे अंदर आते हैं क्योंकि हम मानव हैं अभी और सभी तरह की असुरक्षा की भावना हमारे अंदर बनती है। और उसकी वजह से हमारे विश्वास टूटते जाते हैं।

दूसरी बात कि हमसे कोई गलतियां नहीं होती, ऐसी भी बात नहीं है। कुछ गलतियां होती हैं। उन गलतियों के होने के फलस्वरूप एक तरह का हमारे अंदर भय आ गया है। लेकिन शिवजी की विशेषता ये है कि वो क्षमाशील है। क्षमा के सागर हैं। आपने गलतियां की तो कुछ नहीं। आप उनके दरवाजे में बैठे हैं तो पूरी तरह से क्षमा कर देते हैं आपको। तब आपको भय क्यों होगा। दूसरा वरदान उनको है निर्भयता। बिल्कुल निर्भय होना चाहिए। उनकी कोई सेना नहीं है। आपने तो जाना ही है कि जिस वक्त अपनी बारात लेकर वो पहुंचे थे तो पार्वती जी को तो शर्म आ रही थी। कोई लंगड़े कोई पागल दिखने वाले हिप्पियों जैसे लोग, अजीब से अजीब लोगों को लेकर पहुंचे बारात में। मतलब ये शारीरिक कुछ भी अवस्था हो और जन साधारण के लिए ऐसे लोग कुछ विक्षिप्त से लगें, विचित्र से लगें लेकिन उनके अंदर शिवतत्त्व है। इसलिए शिव के लिए कोई भी पैसा धन की ज़रूरत नहीं। उनके मंदिरों में सोने चांदी के चढ़ावे की ज़रूरत नहीं। मुक्त बैठे हैं। किसी भी चीज में ऐसी शक्ति नहीं कि उनकी शोभा बढ़ाये। ऐसी कोई संसारिक दृष्टि से मूल्यवान वस्तु शिवजी के लायक नहीं। इस तत्त्व को हमारे अंदर आना बहुत-बहुत ज़रूरी है। आज समाज में आप अगर देखें तो पैसे का मूल्य ज़रूरत से ज्यादा है। हर आदमी पैसे का ही मूल्य देखता है। किस चीज में पैसा मिलेगा। क्या करने से पैसा मिलेगा? और पैसे के मूल्य में सभी चीज वो बेचने को तैयार हैं। पैसे नष्ट भी हो सकते हैं। दुष्ट कर्मों में भी डाल सकते हैं, लेकिन शिव तत्त्व में बैठा हुआ मनुष्य उसको किसी चीज की इच्छा नहीं होती। इच्छारहित होता है क्योंकि

अपने आत्मा से ही उसकी आत्मा संतुष्ट है। शरीर की कोई उसको चिंता नहीं होती। शरीर के आराम की उसको चिंता नहीं होती। कहीं भी सुला दीजिए उसको। कुछ भी खाने को दे दीजिए, नहीं तो मत दीजिए। और फिर जब ये दशा आ जाती है तो वो सभी चीजों पर अधिकार करती है। जैसे आपने ऐसे आदमी को खाने को नहीं दिया। लेकिन वो एक नजर फिर दे तो हजारों आदमियों को खाना दे सकता है। उनके शरीर को कोई आराम नहीं है। लेकिन उनकी नजर दाता है। जिससे पड़ जाए वो नजर दान में से भरपूर हो जाए। अब ये कौन सी शक्ति है जिससे वो सबका कल्याण करते हैं? ये है परम चैतन्य। और उसका जो स्पन्दन है उसे शंकराचार्य ने स्पन्द कहा है। इस स्पन्द की शक्ति उनके शरीर से बहती रहती है और जिस आदमी को वो छू जाती है उसी का कल्याण हो जाता है। जिस भूमि पे वो पड़ जाती है वो भूमि बहुत ज्यादा फल फूल देने वाली हो जाती है। जिस स्त्री में पड़ जाएगी वो बड़ी सुबुद्धि वाली हो सकती है। जिस पर पड़ जाए उसका भला हो सकता है। स्पन्द ऐसी चीज है जिससे अच्छाई ही आ सकती है। कोई आदमी आपको मारने को आए, उसका परिवर्तन हो सकता है। कोई आपको सताने आए, उसको सुबुद्धि आ सकती है। एक तरह कि जो परिवर्तन की शक्ति इस स्पन्द में है ये हमारे लिए बड़ी समझने की बात है। इसलिए हर आदमी को आपको क्षमा कर देना चाहिए। आप क्यों उससे बदला ले रहे हैं, कोई जरूरत नहीं। आप सहजयोगी हैं ये स्पन्द पे छोड़ दीजिए। इसे लहरियों पे छोड़ दीजिए। सब समझते हैं सोचते हैं, सब पूरी तरह से व्यवस्था करते हैं। इस शक्ति को आपने प्राप्त किया है। ये आपमें से अव्याध बह रही है। इस शक्ति को आपने आजमाया है कि इससे कितना फायदा होता है। अब जो लोग बुद्धि से इसको जानना चाहें वो नहीं जान सकते। लेकिन आपने तो अनेक चमत्कार देखे हैं, और ये कितनी ऊंची, कितनी प्रचण्ड, कितनी बड़ी शक्ति है, जो कार्यान्वित है और आपको मदद कर रही है। और आप इसके अधिकार को प्राप्त हो रहे हैं। उस वक्त हमें ये सोचना चाहिए कि शिव तत्व हर चीज पर, पूरे पर्यावरण पर चल सकता है। आजकल पर्यावरण का बड़ा भारी संकट संसार पर छाया हुआ है। जितने सहजयोगी होंगे उतना पर्यावरण शुद्ध हो जाएगा। अपने आप ही शुद्ध हो जाएगा।

इसके अधिकार पथ पे आने के लिए सबसे पहले हमें ये जान लेना चाहिए कि अब हम मानव स्थिति में नहीं। हम अब दैवी स्थिति में आ गए हैं। तो मानव स्थिति की जो हमारे अन्दर गलतियाँ हैं जो खींच है, उससे हमें छुट्टी मिलनी चाहिए। ये मानव स्थिति हमें नीचे खींचती है। और बार-बार

हमारे ऊपर आक्रमण करती है। ऐसे ही हम जड़ से पैदा हुए। पहले तो ये आत्मा का झगड़ा इस जड़ से ही प्राप्त हुआ और अब भी ये जड़ बीच-बीच में खींचता रहता है। इसीलिए पहले जमाने में लोगों ने बताया था कि उपवास करो, सन्यास लो, घर बार छोड़ के भाग खड़े हो जाओ और मर जाओ। लोग सोचते थे कि अनेक जन्मों में इस तरह के तपस्या करने से आत्म-साक्षात्कार को प्राप्त होंगे। लेकिन आज का सहजयोग ऐसा है जहाँ पहले आप अपने आत्म-साक्षात्कार को प्राप्त करो। कि पहले मंदिर का कलश बनाओ और फिर उसके नींव को बनायेंगे। क्योंकि अगर बहुत लोगों का पार कराना है और जिसकी जरूरत है तो यही तरीका हमने ठीक समझा। और हिमालय में जाए बगैर, अपने परिवार को छोड़े बगैर और आफत उठाए बगैर ही आप लोगों ने आत्म-साक्षात्कार को प्राप्त किया। ये तो बात सही है। और आपमें स्पन्द की शक्ति भी आ गई। यहाँ तक तो कुण्डलिनी ने काम कर लिया। अब आगे आपको काम करना है। और वो काम ये कि पहले तो अपनी ओर देखना है। जब आप शीशा हो गए तो आप अपने को देखिए। पहले तो अपनी ओर नजर होनी चाहिए कि मैं अब भी एक सर्व साधारण मानव के जैसे रह रहा हूँ। शराब छूट गई। सिगरेट छूट गई। गाली मुँह से निकलना बंद हो गया और स्वभाव भी बहुत शांत हो गया। चेहरे पे भी मासूमियत आ गई। लेकिन अब भी क्या मैं अपने को देख सकता हूँ? क्या मैं अपने को अपने मजे में रख सकता हूँ या मैं बोर हो जाता हूँ? क्या मैं अपने में मजा पाता हूँ? मैं अपने में ही आनन्द को प्राप्त कर सकता हूँ? और क्यों नहीं कर सकता? इस पर आप बुद्धि से विचार कर सकते हैं। क्या अब भी मैं इस या उस चीज में अटका हूँ? और जिन चीजों में आप अटके हैं उसमें अटकते ही जा रहे हैं अगर आप भोले हैं तो कोई चीज आपको अटकाएगी ही नहीं। और जिन चीजों में आप अटके हुए थे वो आपको मिल नहीं रही और फिर से वो ही मानवीय जीवन शुरू हो जाएगा। लेकिन गर आप इन चीजों को देख लें आज हमें ये चीज अटका रही है, ये चीज हमारे अंदर है तो देखने से ही ये चीज गिर जाएगी। इसकी ओर दृष्टि करने से ही ये चीज चली जाएगी। अगर हमें एक नया संसार बनाना है, एक बहुत सुंदर संसार, ऐसी माँ की इच्छा है कि एक विशेष तरह की पीढ़ी तैयार करें जो खालिस हों। इसके बारे में अनेक साधु संतों ने इच्छा की थी। वो अगर आपने करना है तो ये जरूरी है कि आप अपने शिव तत्व को ठीक करें।

शिव तत्व में आप जान लेंगे कि अभी क्या-क्या चीज घुसी हुई है। जैसे आजकल हिन्दू, मुसलमानों का झगड़ा चल

रहा है। कोई हिन्दु हो जाने से शिव तत्व नहीं पाता। न मुसलमान होने से पाता है न ईसाई होने से, न कुछ होने से पाता है। ये सब बाह्य के आडम्बर हैं। लेकिन जब आपमें शिव तत्व प्राप्त होता है तो आप श्री राम को भी मानते हैं और आप मुहम्मद साहेब की भी पूजा करते हैं। जब तक आप शिव तत्व को प्राप्त नहीं होते इन धर्म के आडम्बर से आप निकल नहीं सकते। अन्दर से उनकी भी पूजा उतनी ही होनी चाहिए जितनी श्री राम की। जो रहीम है वो ही शिव है। जो रहमान है, जो अकबर है वो ही विष्णु है। तब फिर ये अन्दर की जो भावनाएं हैं ये ऐसे विकसित हो जाएंगी कि आपके अन्दर से धर्म की सुगंध बहेगी न कि वैमनस्य। पर ये चीज घटित होने के लिए मुझे तो सहजयोग के सिवा और कोई मार्ग नहीं दिखाई देता। जब तक सहजयोग नहीं होगा। तब तक लोग ऐसी पूजा करेंगे? क्या मुसलमान राम की पूजा करेंगे? या हिन्दु मुहम्मद साहिब की पूजा करेंगे। हम लोग तो करते हैं। मुहम्मद साहेब की भी, अली की भी फातिमा बी की, बुद्ध की, महावीर की पूजा करते हैं, क्योंकि ये सब पूजनीय है। हम कौन होते हैं किसी को बड़ा छोटा कहने वाले। पर जब शिव तत्व के सागर में आप घुल जाते हैं तब आप को पता होता है कि ये सब शिव के ही अंग-प्रत्यंग हैं। ये सब अपने ही हैं। ये सब हमारे ही अन्दर हैं। जब तक इस तरह की धारणा हमारे अन्दर नहीं होती तो हो सकता है कि सहजयोग का कार्य कुछ कम तेजी से चले। लेकिन सहजयोग ठोस चीज है। असली चीज है। और ये जो बाह्य की चीजें हैं ये थोड़ी देर के लिए आई, गई। मारा पीटी हुई सब कुछ हुआ। आश्चर्य की बात ये है कि विदेशों में सहजयोग इतने जोर से फैल रहा है। वे लोग बहुत ही गहन हैं। रोज ध्यान करना, रोज अपनी ओर नज़र करना। इन लोगों से हमें सीखना चाहिए। इन्होंने तो कभी शिवजी का नाम भी नहीं सुना था। ईसा मसीह के सिवाय इन लोगों ने कभी शिवजी का नाम भी नहीं सुना था। फिर ये इतनी गहनता में कैसे उतरे? हम लोग रोज ही सुनते रहते हैं। मंदिरों में जाके घंटियाँ बजाते हैं, चर्च में जाके प्रार्थना करते हैं। और सब ठनठन गोपाल। और ये लोग जिन्होंने कभी भगवान को भी नहीं याद किया होगा। इन लोगों में ये गहनता कैसे आ गई? रूस के एक गाँव में 22,000 सहजयोगी बैठे हैं। तो ऐसे हम लोगों में कौन सी खराबी आ गई है कि जिसके कारण हम उस गहनता में नहीं उतर पाते। उसकी वजह ये है कि रोज हम अपने को देखते नहीं। पहले अपने को देखना चाहिए। अपनी ओर नज़र करनी चाहिए। ये नज़र इन लोगों में कहां से आई ये मैं नहीं बता सकती। लेकिन परिणाम देखिए वो बड़े गहन लोग हैं। कभी मुझसे ये नहीं कहेंगे कि हमारे पैसे का क्या होगा, बच्चे, मां बाप, रिश्तेदारों का क्या होगा। बस पूछेंगे कि माँ मेरा क्या होगा।

और जैसे ही वो इस तत्व में आ गए उनके सब प्रश्न अपने आप ही हल हो गये। शिव तत्व में शक्ति ही ऐसी है, वो सारे प्रश्नों को हल कर देती है। उनके प्रश्न अपने आप ही हल हो गये। जो लोग शराब पीते थे, दुनिया भर की चीजें बेचारे करते थे, दल-दल से निकल कर वो आकर किनारे पर बैठ गये। पर हम लोग अभी भी किसी न किसी चक्कर में घूमते ही रहते हैं। इस चक्कर को खत्म करना चाहिए। आज शिव रात्रि के दिन विशेषकर अपने शिव तत्व पे उतरिये ताकि वो आपको सारे गुणों से अलंकृत कर दे। शिव तत्व में ऐसे गुण हैं कि सहज में ही आपके अन्दर धर्म आ जाएगा, सहज में ही आपके अन्दर सुबुद्धि आ जाएगी, सहज में ही सारा ज्ञान आपके अन्दर आ जाएगा। सहज में ही आपमें माधुर्य आ जाएगा। सहज में ही परिपक्वता आ जायेगी। न जाने कितने ही गुण सहज में आपके अन्दर आ सकते हैं। लेकिन पहले ये जान लेना चाहिए नम्रतापूर्वक, कि अभी हम उस तत्व पे उतरे के नहीं? हमें उतरना है। और दूसरी ये कि सारी ही शक्तियाँ सहज में हमारे से प्रस्फुटित हो रही हैं। कुछ करना नहीं पड़ेगा। इस तरह से हमें अपनी ओर देखना चाहिए कि मेरे पति, मेरे बच्चे सहजयोग नहीं करते, नहीं करने दो, ये तो आन्तरिक चीज है जिसको पाना है वो ही पा सकता है। ज़बरदस्ती तो नहीं कर सकते सहजयोग की। आप अपने को देखो। अपने को जानना, अपने को देखना, यही आत्म-साक्षात्कार है। फिर आपको देखकर लोग सहजयोग में उतरेंगे। और इस परम तत्व को पाने के बाद आप लोग इतने शक्तिशाली हो जाएँगे कि न जाने कितने लोगों का आप परिवर्तित कर दें, ये संसार बदल दें। ये संसार बदलने के लिए है। कोई कहेगा यहाँ प्रजातंत्र है और प्रजातंत्र कि ये खराबियाँ हैं। खराबियाँ प्रजातंत्र की नहीं, खराबी इन्सान की है जो शिव तत्व को प्राप्त नहीं करता।

कोई सी भी चीज आप ले आओ वो खराब होनी ही है। उसमें बिगाड़ आना ही हुआ क्योंकि उसमें बिगड़ने के तत्व हैं। लोग आचार बनाते हैं घर में, उसे बहुत सफाई करके, धोकर, सुखाकर ताके उसमें कीड़ा वगैरह कछ नहीं रह जाए। ये जैसे आचार खराब हो जाए वैसे ही हमारा हाल है। ऐसे ये लोग हैं कहां? कोई सा भी आप सवाल बनाओ, कोई सी भी आप चीज बनाओ, यही होने वाला है क्योंकि उसका अंदर काँड़े हैं। उसके अन्दर दोष है। जब तक मनुष्य के अन्दर दोष रहेगा ये जो भी चीज बनाता रहेगा उसमें दोष आना ही है। थोड़े दिन चलता है जैसे गांधी जी ने सत्याग्रह चलाया था तो थोड़े दिन चला। पर उनमें भी बड़े अजीब-अजीब दोष हुए। मैं तो जानती हूँ उनको। पर तो भी जोश था देश को स्वतंत्र कराने का, ये करने का वो करने का। लड़ पड़े। अब तो ऐसा लगता है कि स्वतंत्रता मिल के ये हो क्या

रहा है। खासकर तो मुझे ये वन्देमातरम पर बहुत दुख हुआ। आखिर आपकी मां की स्तुति किसी भी भाषा में हो आखिर मेरी स्तुति आप नहीं जानते कितनी भाषाओं में होगी। आपको क्या बुरा लगना चाहिए? ये 'वन्दे मातरम' तो एक मंत्र है जिसको लेकर के ये देश स्वतंत्र हुआ। मेरे पिताजी झंडा लेकर के चले थे, उच्च न्यायालय में तो उनको गोली मार दी गई। खून बहता रहा पर फिर भी वो चल के ऊपर गए और झंडा फहराया। नारा लगाया 'वन्दे मातरम'। हम सबके दिल दहल गए। इस तरह की चीज इस देश में हो रही है कि वंदे मातरम बंद कर दो। अरे ये देश क्या है तुम कुछ जानते ही नहीं। स्व का तंत्र जानते नहीं स्वतंत्र हो गए। इस तरह से हमारे अन्दर की जो गहन उदात्त भावना है उसे पाने वाले शिव हैं। जो हृदय में प्रेम है और जो सबके प्रति एक आत्मीयता है वो देने वाले शिव हैं। जो हमें ऐसी शक्ति देते हैं। हमारा प्रेम और हमारी आत्मीयता बड़ी आह्लाद दायिनी चीज है। जैसे वंदे मातरम कहते ही एक आह्लाद भर जाता है। वो शिव तत्व की देन है।

आज शिव जी की स्तुति गाते हुए आह्लाद आपमें आया। ये शक्ति शिव ने हमें दी है। इसलिए उन्हें आनन्ददायक कहते हैं। आनन्द में जो निरानंद है, सिर्फ आनन्द, उसमें अनेक तरह के आनन्द हैं। ये आह्लाद जो है ये हमारे भावनाओं से जुड़ा है। भावनाओं में उभरता है जैसे एक फूल से उसकी सुगन्ध मुखरित होती है उसी प्रकार हमारे हृदय में जो भावनाएँ हैं किसी चीज के प्रति अच्छी, उदार, प्रेममय, सुन्दर, ऐसी भावनाएँ हैं। शुद्ध भावनाएँ हैं। उस भावना की जो सुगन्ध है वो ही आह्लाद है। हम उसी आह्लाद में आनन्दमय होते हैं। और फिर किसी चीज की ज़रूरत नहीं रहती। इसको उभारने वाले, इसको जतन से रखने वाले और उचित समय पर इसका अनुभव लेने वाले ये शिवजी ही हैं क्योंकि वे स्पन्द के माध्यम से हमें देते हैं। अभी भी किसी बड़े साधु संत का नाम लो तो सारे बदन पे रोम खड़े हो जाते हैं। एकदम से ये स्पन्द, ये लहरियाँ दोनों बहना शुरू हो जाती हैं। अब ये बुद्धि वादियों को क्या समझाएँ? ये तो आधे गधे हैं, और जो कुछ बचा वो धोड़े। इनके अन्दर तो आप कुछ घुसा ही नहीं सकते और घुसाओ भी मत। आप को चाहिए कि आप अपना ही जीवन इतना सुन्दर बनाओ कि ये पीछे रह जाएँ और ये देखें कि ये समाज क्या है। अपने बुद्धि चातुर्य से इन्होंने कुछ लोगों को अपने अन्दर फँसा लिया। कितने लोगों को फँसाया, कितने झगड़े चलते रहते हैं। लेकिन आपका अगर समाज ऐसा बने जो आज बना हुआ है, आपस में हमारे कोई झगड़े नहीं ऊँच-नीच नहीं। किसी ने बताया कि दिल्ली में कोई सहयोगी

मर गए। वो बहुत बीमार थे तो उनके क्रियाक्रम में कोई रिश्तेदार वगैरह नहीं आए। सब सहजयोगियों ने अपने तरफ से किया। एक चीज कहीं हो जाती है वहाँ तो दुनिया भर से लोग दौड़ने लगते हैं। कोई ये नहीं सोचता कि मेरा रिश्तेदार हैं। ये तो सब निर्वान्य प्रेम है कि ये सहजयोगी हैं और हम भी सहजयोगी हैं। एक दूसरे को मदद करने के लिए, एक दूसरों को सँवारने के लिए आपको जो मोड़ते हैं, खींचते हैं वो शिव तत्व हैं। चिंता लगी रहती है कि दो सहजयोगी ठीक रहें। ये जो चिंता है इसमें कोई लेन-देन की बात नहीं, इसमें कोई लाभ सोचा नहीं जाता पर एक ही तकलीफ है। ये जो नितांत, आपस की जो खींच है जो आत्मीयता है ये आप शिव तत्व से प्राप्त कर सकते हैं। ओर किसी भी तत्व से आप प्राप्त नहीं कर सकते। इसीलिए मनुष्य को शिव तत्व में उतरना चाहिए।

आपने सुना होगा कि बोस्निया में दो सौ हजार लोग भूखे मर रहे हैं, मुसलमान हैं। और बड़ी तकलीफ की बात है कि छाने पीने को नहीं। बर्फ पिघला कर वो पानी पी रहे हैं। जब लोग मर जाते हैं तो उन्हीं का गोश्त खा रहे हैं। इतनी दुर्दशा में लोग हैं और किसी को उनके प्रति आत्मीयता नहीं। कोई लोग सोचते नहीं कि वो मर रहे हैं। मुसलमान देशों में इतना पैसा है, लेकिन कोई नहीं जाता उनको बचाने। जिस दिन संसार में शिव तत्व प्रस्थापित होगा ये सब ठीक हो जाएगा। ये झगड़े ही सब खत्म हो जाएंगे। कहते हैं कि 8-9 साल में ही ये सब घटित होना है। देखिए कितने लोगों की समझ सहज तक पहुँचती है? इतनी समझदारी लोगों में है कहीं? आप लोगों पे निर्भर हैं कि आपके शिव तत्व के प्रकाश से दुनिया प्रभावित हो जाये और ये जो हमें आफतें दिखाई दे रही हैं, जो मनुष्य की ही मूर्खता से पैदा हुई हैं, पूरी तरह से नष्ट हो जाएँ।

आज शिवजी से यही मांगना है कि ये शिव तत्व हमारे अंदर फिर स्थापित हो जाए। ये ही एक प्रार्थना शिवजी से करनी है कि शिव तत्व को आप हमारे अन्दर स्थापित कर दें। बहुत लोग पैसे कमा लेते हैं। बड़े-बड़े पदों पर चले जाते हैं बड़े-बड़े खिताब उन्हें मिलते हैं, सब कुछ होता है। ये तो मिलते ही रहते हैं। लेकिन आज की जो क्रान्ति है, आन्दोलन है, वो क्रान्ति मनुष्य के परिवर्तन की और सारे संसार को ठीक करने वाली है। उसके लिए कोई त्याग नहीं करने का कि मैंने ये त्याग किया मैंने वो त्याग किया। अपने आप छुट गए। जब सब कुछ छूट गया तब फिर परेशानी किसी चीज की? इस शिव तत्व में आप सब लोग उतरें ऐसा ही हमारा आशीर्वाद है।

परमात्मा आप पर कृपा करें।

MARATHI TRANSLATION

(Hindi Talk)

Scanned from Marathi Chaitanya Lahari



महाशिवरात्री पुजा

(दि. १९/२/९३ मुंबई)

शिवपूजा फार महान आणि विशेष पूजा असते. शिव तत्त्वाची प्राप्ती हे मानवाचे अंतिम ध्येय असते. शिवतत्त्व मानवी बुद्धीच्या पलिकडे असून बुद्धीने जाणता येणार नाही. आत्मसाक्षात्कार मिळे पर्यंत आत्मा व शिवतत्त्व यांचे ज्ञान होऊ शकत नाही. श्री शिवांच्या नांवाखाली खोटेपणा, मिथत्व आणि अंधश्रद्धा निर्माण झाल्या आहेत. आत्मसाक्षात्कारी झाल्या शिवाय व्यक्तिला भगवान शिवांचे ज्ञान होणे अशक्य आहे. कारण त्यांचा तो स्वभावच आहे की त्यांना समजण्यासाठी व्यक्तीला ज्या पातळीवर सर्व सद्गुण अंतर्धानी प्रस्थापित होतील त्या उंची पर्यंत पोहोचवा लागते.

ते निरासक शंकर आहेत असं म्हटले जाते. आजकाल अनेक बुद्धीवादी लोक निर्माण झाले आहेत. त्यांनी त्यांच्या बुद्धीच्या भरत्या मारताना जो काही मुख्यपणा त्यांच्या डोक्यात शिरला तो ते लिहून काढतात. त्यांच्या मते भगवान शिवांच्या अवोधितेला काही महत्त्व नाही. व्यक्ती जेवढी धूर्त व कारस्थानी असेल तेवढी ती अधिक प्रसिध्द होते तर मग असे असताना श्री शिवांचे भोळेपण कसे समजणार! आधुनिक काळात भोळ्या माणसास मुख्य समजले जाते. परंतु भगवान शिवांचा भोळेपणा असा आहे की तेव सर्व आहेत. समजा एखादा श्रीमंत माणूस निरासक्त झाला तर लोक त्याची संपत्ति चोरून नेतील. पण त्या चोरीचा त्याच्यावर कोणताही परिणाम होणार नाही. लोकांना त्याचे भोळेपण विचित्र वाटते पण निरासक्त झाल्यावर त्या संपत्तिचा त्याच्यावरचा पगडा केव्हाच गेला. त्याच्या निरासतेच्या आनंदात तो रममाण असतो.

जिथे सर्व काही आपोआप घडते व कार्यान्वित होते, त्या ठिकाणी भगवान शिवांचे कार्य काय असावे? ते प्रत्येक गोष्टीस अवोधितपणात साक्षी असतात. शक्तीने सर्व विश्वाची निर्मिती केली, सर्व देवतांची व त्यांच्या कार्याची निर्मिती केली. श्री शिवांचे कार्य केवळ साक्षी असते एवढेच आहे. त्याच्या साक्षी स्वरूपतत्त्वामध्येच सर्व काही घटीत होते. त्याची दृष्टी ज्या व्यक्तीवर पडते त्या व्यक्तीचा उद्धार होतो. त्यांची दृष्टी जिथे जिथे जाते तेथे आशिर्वादात होते. हा एक प्रकारचा खेळच आहे. त्यांना मुद्दाम काही कायला लागत नाही. जसं लहान मुलाना खेळ तसाच हाही पवाचा एक खेळच आहे, आणि त्याला ते साक्षी आहेत.

त्याच्या अवोधितेचा आणखी एक पैलू आहे. जेव्हा एखादा दुष्ट मनुष्य, निष्पाप, सत्यवचनी आणि न्यायी माणसास त्रास देतो त्या वेळी तो खूप रागायतो, त्याचा क्रोध भयंकर असतो. हुषार माणूस त्याचा राग शांत करण्यात यशस्वी होतो, परंतु अवोधित माणूस हसत राहतो कारण त्याच्यावर काहीही परिणाम होणार नाही, हे माहीत असते. हा शिवांचा उत्तम गुण आहे. व तो सहजयोग्यानमध्ये उतरायचास हवा.

आपण कुल्लूक गोष्टींचा विचार करत बसतो. त्यावर कसा विजय मिळवायचा? जसे श्री शिवानी सर्व गोष्टी शक्तीवर सोपवल्या आहेत त्याच प्रमाणे तुम्ही सुद्धा सर्व गोष्टी शक्तीवर सोपवा. परंतु ही स्थिती यायला हवी. निष्पापता तुमच्यात घटीत / प्रस्थापित झाली पाहिजे. निष्पापता म्हणजे ज्यावेळी तुमच्यात कोणतीही दुष्ट शक्ती शिरकाय करू शकत नाही. जर तेथे एखादा साप असल तर असूदे, काळजीचे

कारण नाही. जो खरोखर पवित्र आहे त्याच्यावर कशाचाही परिणाम होणार नाही. जो मध्यात आहे त्याची शक्ती त्याचे संरक्षण करते. ह्या शक्ती शिव तत्वाद्वारे आपल्यात वास्तव्य करून असतात. शिवतत्त्व प्राप्त होण्यासाठी आत्मसाक्षात्काराची आवश्यकता आहे. कुंडलिनी ही शक्ती आहे आणि चक्रे ह्या पायऱ्या. शिवतत्त्व मिळविण्यासाठी मनुष्याला या सर्व पायऱ्या चढून जाव्या लागतात. पार करून जाव्या लागतात.

हे सर्व देवदेवतांचे प्रकटीकरण आहे. हे त्यांचे कार्य आहे. आणि ते त्यांच्यात मग्न आहेत. माणसा प्रमाणे ते स्वतःबद्दल व स्वतःच्या दर्जा विषयी विचार करीत नाहीत. ते शिवांचाच एक अविभाज्य भाग आहेत. माणसाचे शिवतत्वात उत्थान घडवून आणण्यासाठी मदत करणे हा त्याचा स्वभावधर्म आहे. त्यांना कोणी व्याख्यान द्यावे लागत नाही. किंवा सांगावे लागत नाही. तरीही ते आपल्या कामात (गर्क) बुडून गेलेले असतात. आपण काही विशेष करत आहोत असा विचार ते करत नाहीत. तर ते कर्तव्य करीत राहतात. स्वतःच्या शक्ती त्यांच्या ध्यानी मनीही नसतात. जसे साखरेला स्वतःची गोडी माहित नसते. परंतु ती अन्नास गोडी आणते. सहजयोगी जेव्हा कार्य करतात. तेव्हा त्यांच्यातील शक्तीची प्रेरणा त्यांना माहित नसते. कार्य करताना मी कर्ता आहे, मी लिडर आहे अशी जाणीव झाली तर तुम्ही सहजयोगी नाहीत. सहजयोगीतून तुम्ही कमी होत.

आपण काही करतो आहे याची जाणीव न ठेवता तो कार्य करीत राहतो. तो दुसऱ्यांशी प्रेमाने वागतो हे त्याला समजत नाही. पण इतरांना ते वागणे फारच प्रेमाचे वाटते.

आत्मसाक्षात्कार म्हणजे काय हे तुम्हाला समजले पाहिजे. एक म्हणजे तुम्ही जसे आहात तसे दुसरे तुमचे आरश्यातील प्रतिवीव आणि तिसरे म्हणजे तुमची आरश्यात बघण्याची क्रिया (साक्षीरूप) अशा प्रकारे तुम्ही त्रिमितीत वावरता. पहिली मिती म्हणजे साक्षीरूपता दुसरी म्हणजे जे बघायचे त्याची प्रतिमा आणि तिसरे म्हणजे पहाण्याची क्रिया. ह्या तीनही गोष्टी एक होऊ शकतात, कश्या? जर तुम्ही स्वतःच आरसा झालात तर तुम्ही स्वतःला पाहू शकता. जानू शकता. हेच तुकारामांनी सांगितले आहे कि जर तुम्ही स्वतःला ओळखलेत तर दुसरे काहीच करण्याची आवश्यकता नाही. जेव्हा या तीनही एक होतात तेव्हा तुम्ही आत्म्या मध्ये स्थित होता. जेव्हा तुम्ही पूर्णपणे स्वतःत स्थित होता तेव्हा तुम्ही शिव तत्त्व प्रस्थापित झाले असे म्हणता येईल. कारण शिवतत्त्व हे धिरंतन अपरिवर्तनीय आणि अविनाशी आहे. तेव्हा तुम्ही शिवतत्वात प्रस्थापित व्हाल तेव्हा आपण काही करतो आहोत अशी तुम्हाला जाणीव होणार नाही. तुम्ही आत्म्यामध्ये रममाण होता, तेव्हा मला काही करायच आहे असा विचार तुम्ही करणार नाहीत. खूप लोक कंटाळलेले दिसतात कारण ते स्वतःला पाहू शकत नाहीत. मी माझ्या स्वतःच्याच सहवासात

जारत आनंदी असते. तुम्ही हे अमृत प्यायल्या नंतर तुमच्यामध्ये अवोधिता येते.

आपण जर संत असू तर कोणोही आपला विनाश करू शकणार नाही हे आपल्याला माहित पाहिजे. पण ही श्रद्धा मिळविणे कठीण असते. आत्मसाक्षात्कारानंतर तुम्ही सहजयोगी बनता पण शिवयोगी होण्यासाठी सर्वांचे श्रद्धा हवी. संकट काळात तुम्ही विसरता कि सहजयोगी असल्यामुळे, सर्व देवता, गण आणि दूत तुमचे रक्षण करत असतात. ज्या क्षणी तुमची श्रद्धा ढळेल त्याक्षणी ते सर्व निघून जातात. आपण मानवी पातळीवर असल्यामुळे अजूनही आपल्या मनात शंका येतात. अश्या प्रकारे असुरक्षितता तुमच्या मनात घर करते आणि त्यामुळे तुमची श्रद्धा डळमळते.

दुसरे म्हणजे आपण चुका करत नाही असे नाही, तर आपण चुका करतो आणि त्यामुळे एक प्रकारचे भय आपल्या येते. शिवाचा स्वभाव क्षमाशील आहे. तो क्षमेचा सागर आहे तो तुमच्या सर्व चुकाना क्षमा करतो त्यामुळे भितीचे कारण नाही. शिव हे निर्भय आहेत. तुम्हीही निर्भय असले पाहिजे त्यांच्याकडे सैन्य नाही. शिवांची उपासना करण्यासाठी धनदीलतीची गरज नाही. शिवांच्या देवळात सोने-चांदी अर्पण करण्याची आवश्यकता नाही ते संपूर्ण मुक्त आहेत. त्यांची शक्ती वाढवेल असा कोटलाही शक्तीचा स्तोत्र नाही. त्यांना मोल्यवान वाटेल अशी एकही जडबस्तू नाही. हे शिवतत्त्व आपल्या मध्ये वागणे फार महत्वाचे आहे. आपण हल्ली समाजात पैश्याला गरजेपेक्षा जास्त महत्त्व देतो. प्रत्येक गोष्ट पैशात मोजली जाते. पैशासाठी लोक काहीही विकायला तयार आहेत. पैसा नम्वर आहे किंवा त्याचा दुरुपयोग होऊ शकतो. परंतु शिवतत्वात समान झालेल्याला कश्याचीही ईच्छा रहात नाही. तो निरीच्छ होतो. त्याचा आत्मा त्याच्यातच समाधानी असतो. तो शारीरिक सुखसोयीची चिंता करत नाही. खायला मिळो अथवा न मिळो, शरीर कोठेही झोपू शकते. अशी जेव्हा स्थिती येते तेव्हा तुमचा सर्व गोष्टीवर ताबा येतो अश्या माणसाला जरी काही खायला दिले नाही तरी एका दृष्टीक्षेपात तो हजारांची भूक तृप्त करू शकतो. अश्या माणसाला शारिरिक सुखसोयी नसल्या तरी त्याचे चित्त जेथे जाते त्या माणसास विपूल आशिर्वाद मिळतात. अशी त्याची दृष्टी हितकारक असते.

कोणत्या शक्तीतून हितकारकता कार्यान्वित होते? ती शक्ती म्हणजे परम चैतन्य. जिचे वर्णन शंकराचार्यांनी चैतन्यलहरी असे केले आहे. ह्या चैतन्य लहरीची शक्ती अशा व्यक्तीच्या शरीरातून वाहत असतात आणि ते ज्याला स्पर्श करतील तो आशिर्वादीत होतो. ज्या जमीनीवर त्या (चैतन्यलहरी) पडतील ती जमीन सुपीक होऊन तीच्यातून फळाफुलांचे अमोघ उत्पादन होते. जी स्त्री ह्या चैतन्य लहरीच्या सानिध्यात येते ती सुज्ञ व प्रगल्भ होते. चैतन्य लहरी ही अशी शक्ती आहे की

ती नेहमी लाभदायक असते. तुम्हाला त्रास देण्यासाठी किंवा तुमच्यावर हल्ला करण्यासाठी आलेल्या मनुष्याचे सुद्धा परिवर्तन होऊ शकते. चैतन्य लहरीत सुप्त असलेली परिवर्तन करण्याची शक्ती आपण समजून घेतली पाहिजे. म्हणून तुम्ही प्रत्येकाला क्षमा केली पाहिजे.

तुम्ही सहजयोगी आहात तुम्ही सुखबुद्धीचा आश्रय का घेता? तुम्ही सर्व काही चैतन्य लहरीवर सोडा. त्या प्रत्येक गोष्ट समजून घेतात. विचार करतात आणि आयोजन करतात. तुम्ही ही शक्ती मिळविलेली आहे. ती तुमच्यातून वाहत आहे, पण तिच्या पासून किती फायदे होतात याचा अनुभव तुम्ही घेतला आहे का? जे बुद्धीने समजण्याचा प्रयत्न करतील त्यांना हे समजणार नाही. तुम्ही चैतन्य लहरीचा चमत्कार पाहिले आहेत. त्यांची बुद्धी तीव्र आहे. अति कार्यशील आहे आणि शक्तीशाली आहे. आणि त्या तुम्हाला सतत मदत करतात. तुम्ही त्यांच्यावर प्रभुत्व मिळवू शकता.

हे महान शिवतत्व प्रत्येक गोष्टीत अस्तित्वात असते हे आपण ओळखले पाहिजे, आणि ते पूर्ण पर्यावरणात कार्यान्वित होऊ शकते. सध्या पर्यावरणातील प्रदुषणाने विकट प्रश्न निर्माण केला आहे. जेवढे जास्त सहजयोगी असतील तेवढे पर्यावरण शुध्द राहील. उत्स्फूर्तपणे ते शुध्द होईल.

आपण मानवी पातळीच्या पलीकडे जाऊन दैवी / दिव्य पातळीवर पोहोचलेले आहोत हे लक्षात घेतले तरच आपण आपल्या चैतन्य लहरींना योग्य दिशा देऊ. म्हणून आपण मानवी कमकुवतपणा आणि मुख्य पणाच्या वेड्या ज्या आपल्यावर वर्चस्व गाजवून परत आपल्याला मानवी पातळीकडे ओढत असतात त्या आपण तोडल्या पाहिजेत. आत्मा आणि जड यांच्यामध्ये सतत संघर्ष असतो ज्या अर्थी आपण जडाचे बनलो आहोत त्या अर्थी ते आपल्याला त्याकडे ओढण्याचा प्रयत्न करते आणि म्हणून पूर्विच्याकाळी सर्वसंग परित्याग करून लोक रानात खडतर तपश्चर्या करून भौतिक मोहातून मुक्त होऊन आत्मसाक्षात्कार मिळविण्याचा प्रयत्न करीत. त्याऐवजी सहज योगात आपण आधी आत्मसाक्षात्कार मिळवितो. जरसे आधी कळस मग पाया. जर बहु जनाना आत्मसाक्षात्कार घ्यायचा असेल तर हाच एक मार्ग आहे. हल्ली लोकांना घरदार न सोडता हिमालयात न जाता किंवा दुसरे कोठलेही कष्ट न सोसता आत्मसाक्षात्कार मिळवला आहे, आता कुंडलिनी आपले कार्य करीत आहे. तुम्हाला चैतन्य लहरीची शक्ती जाणवत आहे. परंतु तुम्ही आता एकच गोष्ट करायची ती म्हणजे साक्षीरूप रहायचे. आता तुम्ही आरसा झाला आहात तर तुम्ही स्वतःला पहा. प्रथम तुम्ही स्वतःवर लक्ष केंद्रित करा. की मी एका मर्यादशिल सभ्य मनुष्यासारखा वागतो का?

मद्यसेवन, धुमपान आणि शिवीगाळ करणे यासारख्या वाईट सवयी गेल्या आहेत आणि माझा स्वभावही शांत झालेला

आहे. चेहऱ्यावर अबोधितता आली आहे. पण आता पुढे काय? मी मला पाहू शकतो का? मी माझ्यातच रमतो कां कंटाळतो? मला माझ्या स्वतःतच आनंद घेता येतो का नाही? ह्यावर तुम्ही आत्मपरिक्षण केले पाहिजे. अजुनही मला कोणत्याना कोणत्या तरी गोष्टींची पकड आली तर ती सतत येत राहील. तुम्ही ज्या गोष्टींची लालसा कराल ती गोष्ट तुम्हाला मिळेलच असे नाही. उलट अशी लालसा तुम्हाला ऐहिक / भौतिक मानवी अस्तित्वाकडे खेचून नेईल. तुम्ही जर तुमच्या आलेल्या पकडीचे साक्षीरूपाने निरीक्षण केलेत तर ती पकड आपोआप नष्ट/नाश पावेल. जर तुम्हाला खास विकरीत पीढीचे सुंदर नवयुग, जे पुरातन संताना अपेक्षित होते ते निर्माण करायचे तर शिवतत्व प्रस्थापित केले पाहिजे.

विविध पैलू असलेले शिवतत्व तुम्हाला समजून घेतले पाहिजे. तुम्ही हिंदू किंवा ख्रिश्चन असल्यामुळे शिवतत्व मिळेल असे नाही. कोणत्याही धर्माचे स्वरूप हे चुकीचा मार्ग दाखविणारे आहे. जेव्हा तुमच्यात शिवतत्व प्रस्थापित होते तेव्हा तुम्ही श्रीराम व मंहमद साहेब या दोघांचीही भक्ती करता. ह्या दोनही अवतारी पुरुषांची भक्ती करणे सारखेच महत्वाचे आहे. जो राम आहे तोच रहीम आहे. जो अकबर आहे तोच विष्णू आहे. असं झालं, तर अंतरिक प्रेरणा बहरेल आणि धर्माचा सुंगघ तुमच्यातून बहायला लागेल. परंतु हे वास्तव / प्रत्यक्षात उतरण्यासाठी सहजयोग शिवाय दुसरा मार्ग मला दिसत नाही. जो पर्यंत सहजयोग येत नाही. तो पर्यंत श्रीराम आणि मंहमदसाहेब या दोघांची भक्ती लोक कसे करू शकतील? सहजयोगात आपण श्रीराम, मंहमदसाहेब, अली, फातीमाची श्रीबुद्ध, श्रीमहावीर, आणि इतर अवतारी पुरुष यांची पुजा करतो. कारण ते पुजेस पात्र आहेत. कोण मोठा आणि कोण लहान हे ठरविणारे आपण कोण? तुम्ही जेव्हा शिव तत्वाच्या सागरात विलीन व्हाल त्यावेळी तुम्हाला समजेल की हे सर्व अवतारी पुरुष श्री शिवांचेच अविभाज्य भाग आहेत. हे सर्व आपल्यात वास करतात. हे सर्व आपल्यात प्रकाशित होईपर्यंत सहजयोगाची प्रगती हळूहळू होईल. परंतु सहजयोग हा वास्तव आणि सत्य आहे. बाकी सर्व गोष्टी क्षण भंगुर, जुन्या व बोलण्या पुरत्या आहेत.

नवलाची गोष्ट अशी की परदेशात सहजयोग वेगाने पसरला आहे. ते गंभीर / गहन लोक आहेत. ते रोज ध्यानधारणा करून आत्मपरिक्षण करतात. आपण त्यांचेकडून शिकले पाहिजे. येशूख्रिस्ता शिवाय त्यांनी शिव किंवा कोणत्याही देवाचे नांव ऐकले नव्हते. रशियातील एका ठिकाणी ज्यांनी देवाचे नांव सुद्धा ऐकले नव्हते असे बावीस हजार लोक सहजयोगात आले. रोज देवळात जाणाऱ्या, धर्मकृत्य करणाऱ्या आपल्या सारख्याच्या तुलनेत ते लोक एवढे गहनात कसे उतरले? त्याचे कारण असे आहे की आपण रोज स्वतःचे आत्मपरिक्षण करत नाही. प्रथम आत्मपरिक्षण करा. स्वतःवर लक्ष केंद्रित

करा. स्वतःवर लक्ष केंद्रित करण्याचे तंत्र त्यांनी कोतून आत्मसात केले हे मला माहीत नाही. ते कधीही पैसा अडका अथवा कुटुंबाबद्दल विचारत नाहीत तर त्यांचे लक्ष स्वतःच्या उत्थानाकडे असते. ते जेव्हा हे तत्व आत्मसात करतात तेव्हा त्यांच्या समस्यांचे आपोआप निराकरण होते. शिवतत्वाची शक्ती अशी आहे की ती उत्स्फूर्तपणे सर्व समस्यांचे निराकरण करते. सर्व प्रकारचे वाया गेलेले, मद्यपी वगैरे लोक व्यसनांच्या दलदलीतून बाहेर येऊन आता चांगले सुधारले आहेत. परंतु आपण अजूनही एखाद्या चक्रात गोल गोल फिरत आहोत. हे चक्र संपले पाहिजे.

आज शिवरात्री आहे. तेव्हा तुम्ही शिवतत्व प्रस्थापित केले पाहिजे. ते तुम्हाला सर्व गुणानी आशिर्वादीत करेल. शिवतत्त्वामध्ये असे गुण आहेत की तुमच्यामध्ये सहजयोग धर्म प्रकाशित होईल, सहजयोगात तुम्हाला अज्ञान दूर करणारी सृजना, ज्ञान, माधुर्य आणि अमर्याद सद्गुण प्राप्त होतात. परंतु प्रथम आपण नम्रतापूर्वक हे जाणले पाहिजे की आपल्यात शिवतत्व अजून प्रस्थापित झालेले नाही.

दुसरे असं की तुमच्या मध्ये सर्व शक्ती बहरतील. तुम्हाला काही करावे लागणार नाही. तुम्ही स्वतःचे परिक्षण करा आणि तुमचे नातेवाईक / इतर सहजयोग करतात का नाही ह्याची धिंता करू नका. तुम्ही कोणास सहजयोग करण्यास सक्ती करू शकत नाही. आत्मपरिक्षण करा, स्वतः ला ओळखा हाच सहजयोग आहे. तुमचे उदाहरण म्हणून पाहून लोक सहजयोग घेतील. हे महान तत्व तुम्ही आत्मसात केल्यानंतर इतके शक्तीशाली व्हाल की इतर अनेक लोकांत तुमच्यामुळे परिवर्तन होऊन जगात परिवर्तन घडेल. हे जग परिवर्तनशिल आहे. काही लोकाना लोकशाहीत दोष दिसतात. परंतु लोकशाहीत दोष नसून दोष माणसात आहे. कोणतीही गोष्ट आणली की ती खराब होणार कारण न्हास होण्याचा गुण तिच्यात सुप्त असतो. आपण लोणचे टिकविण्याची खूप काळजी घेतो पण काही दिवसांनी ते आपोआप खराब होऊ लागते. माणसाचेही तसेच आहे. आपण काहीही बनवा ते खराब होणारच कारण निगेटीव्हिटी सुप्तपणे त्यात असते. जो पर्यंत माणसामध्ये निगेटीव्हिटी आहे तो पर्यंत तो जे बीज बनवेल त्यात निगेटीव्हिटी असणारच. एखादी गोष्ट काही काळ सुरळीत चालेल जसे गांधींच्या नेतृत्वाखाली त्यांच्या चळवळी काही काळ चालल्या आणि त्यातील दोषांमुळे नंतर त्या निकामी ठरल्या. परंतु तरीही देशाच्या स्वातंत्र्यासाठी त्या चळवळी आवश्यक होत्या. परंतु स्वातंत्र्य प्राप्तीनंतर काय चालले आहे? प्रत्येक स्वातंत्र्य सैनिकाच्या तोंडी असलेले "वंदे मातरम" हे गीत सुद्धा ते रोखू पहात आहेत. माझ्या वडीलानी छाती वर गोळ्या झेलून मुखाने हे गीत म्हणत राष्ट्राचा ध्वज फडकविला. कोणत्या भाषेत हे गीत लिहीले आहे हा प्रश्न येत नाही. त्यांनी स्वातंत्र्य मिळविले पण स्वचे तंत्र ओळखले नाही. माझी आरती किती भाषात म्हटली जाते आपल्यामध्ये गहन सद्गुण प्राप्त

करण म्हणजे शिवतत्व होय. आपल्या हृदयात जे प्रेम असते ते आपल्याला श्रीशिवांकडून प्राप्त झालेले असते आणि त्याचा प्रेमांच स्तोत्र दुसऱ्याला अंतर्मुख करतो. श्री शिव आपल्याला अशी शक्ती देतात की तिच्या मुळे आपले प्रेम आल्हाददायक होते. ज्या प्रमाणे वंदेमातरम हे गीत गाताना आनंदाची परिसीमा प्राप्त होते.

आज श्री शिवाची स्तुती गाताना तीच जाणीव येत आहे. ही शक्ती श्री शिवानी दिली आहे आणि म्हणून त्यांना "आनंददायक" असे म्हणतात.

ह्या आनंदाचे अनेक घटक आहेत. उदाहरणार्थ निरानंद, आत्मानंद आल्हाद..... हे आनंद आपल्या भावनांशी संवादी असतात जसे सुवास हा फुलांशी. त्याच प्रमाणे एखाद्या गोष्टी विषयी आपल्या हृदयात सुंदर शुद्ध आणि सात्विक भावनांची निर्मिती म्हणजेच आल्हाद ज्या मुळे आपण रोमांचित होतो. त्यानंतर आपल्याला कशाचीही आसक्ती रहात नाही. योग्य वेळी ही प्रज्वलीत करणारी, व्यक्त करणारी आणि अभिव्यक्ती करणारी शक्ती म्हणजेच श्री शिव होत. श्री शिव हे चैतन्य लहरीच्या माध्यमातून ही शक्ती आपल्याला देतात. जर तुम्ही नुसते एखाद्या आत्मसाक्षात्कारी संताचे नांव घेतले तरी माझ्या अंगावर रोमांच उभे राहतात आणि चैतन्य लहरी वाहू लागतात. सहजयोग्यांना एकत्र बांधणारे प्रेमाचे धागे हेच शिवतत्व होय. सहजयोग्यांना एकमेकांना बदल वाटणारी ओढ आणि ममत्वाची भावना / दृढमैत्री हे सुद्धा शिवतत्वातूनच येते. हे दुसऱ्या कोठल्याही गोष्टी पासून मिळणार नाही. म्हणून आपण शिवतत्व प्रस्थापित केले पाहिजे.

योरनियांत हजारो मुस्लिम उपासमारीने अमानुषपणे मरताहेत परंतु त्याच्याबद्दल कोणीही आपुलकीची भावना बाळगत नाहीत. घनाढ्य मुस्लिम राष्ट्रही त्याची संकटातून सुटका करत नाहीत. ज्या दिवशी जगात शिवतत्व प्रस्थापित होईल त्यावेळी सर्व काही ठिक होईल. प्रत्येकजण "विश्व निर्मल धर्माचा स्विकार करेल आणि सहज योगी बनेल त्यावेळी सर्व प्रश्न सोडवले जातील. येत्या - आठ / नऊ वर्षांत असे होईल असे माहित केले गेले आहे. तुमच्यातील शिवतत्वाच्या प्रकाशाने सर्व जगाचे परिवर्तन घडू दे आणि मानवनिर्मित संकटे आणि मुख्यपणाच्या कल्पनांचा नाश / न्हास होऊ दे. आज आपल्यातील शिवतत्व प्रस्थापित होण्यासाठी आपण श्री शिवांची प्रार्थना करू या. खूप लोकांनी उच्चपद प्राप्त केले आहे. अमाप संपत्ती मिळविली आहे. पुस्तके लिहीली आहेत इत्यादि. आजची चळवळ ही मानवाच्या परिवर्तनाची आहे. हे जगातील सर्व प्रश्न सोडवील. ह्याकरिता कोणताही स्वार्थत्याग अथवा कष्ट घेण्याची जरूरी नाही.

सर्व कसे आपोआप/उत्स्फूर्त होईल. तथे काळजीचे कारण नाही. तुम्हा सर्वांच्यात शिवतत्व प्रस्थापित होओ असे माझे तुम्हाला आशिर्वाद आहेत.